ओ३म्
5331

खण्डन-मण्डन ग्रन्थमाला पुष्प सं० ५३

खुदा का रोजनामचा।

लेखक—
आचार्य डा० श्रीराम आर्य
कासगंज

प्रकाशक
वैदिक साहित्य प्रकाशन
कासगंज (उत्तर प्रदेश) भारतवर्ष

दयानन्दाब्द १४६

प्रथमबार] सृष्टि संवत् १९७२९४९०७१ [मूल्य ०-१५

सन् १९७१

—खुदा का रोजनामचा—

वैदिक धर्म में ईश्वर को सर्वज्ञ, सर्वव्यापक तथा सर्व शक्तिमान माना गया है जिसका अर्थ है कि परमात्मा विश्व की प्रत्येक बात को जानता है और उसका यह ज्ञान नित्य है। क्योंकि परमात्मा नित्य है अतः उसका ज्ञान एवं सभी गुण भी नित्य हमेशा रहने वाले है। वह विश्व के कण-कण में सम्पूर्ण अनन्त विश्व के भीतर बाहर परिपूर्ण व्याप्त है। विश्व की समस्त शक्तियाँ परमात्मा में सन्निहित हैं वह अपने कार्य क्षेत्र में किसी की सहायता की अपेक्षा नहीं रखता है अतः उसे सर्व व्यापक एवं सर्व शक्तिमान माना गया है।

वैदिक धर्म के अतिरिक्त यहूदी, ईसाई व मुसलमानी मतों के धर्म ग्रन्थों ने परमेश्वर को जिस रूप में माना है इससे उसमें बहुत से दोष आ जाते हैं। वह अल्पज्ञ, दूसरों की सहायता का मौहताज, एक देशीय, क्रोध ईर्षा आदि दोषों से ग्रस्त सिद्ध होता है। जो भी दोष एक कमजोर मनुष्य में हो सकते हैं वे सभी ईश्वर में इन मजहबों में लगाये गये हैं। यहाँ हम दृष्टान्त के लिये ईसाई व मुस्लिम मतों की मान्यतानुसार खुदा की अल्पज्ञता के विषय में कुछ प्रमाण उपस्थित करते हैं।

बाइबिल ईसाई मत का एक मात्र धर्म ग्रन्थ है। उसमें प्रकाशित वाक्य नामी पुस्तक में लिखा है कि खुदा अपनी याद्दाश्त के लिये अपने पास रजिस्टर रखता है और उसमें हर आदमी के कारनामे लिखा करता है। प्रमाण निम्नप्रकार हैं—

"और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूँगा" ३।५

'और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा

हुआ न मिला वह आग की झोल में डाला जायगा।' (प्रकाशित वाक्य २०।१५)

इससे स्पष्ट है कि खुदा के पास जीवन की पुस्तक नाम से एक रजिस्टर रहता है जिसमें हर भले बुरे व्यक्ति के बारे में लिखा रहता है। कयामत के दिन जब ईसाई मान्यतानुसार खुदा सभी मनुष्यों का न्याय करेगा तो उस किताब को देखकर करेगा। किसी को स्वर्ग देगा तो किसी को नरक में झोंक देगा। यदि जीवन की पुस्तक न हो तो खुदा असख्य लोगों का न्याय अपनी याद्दाश्त के बल पर नहीं कर सकेगा। इससे खुदा कम-जोर याद्दाश्त वाला सिद्ध है। वह न्याय के लिये जीवन की पुस्तक (डायरी) की मदद का मौहताज रहेगा। यदि वह किताब खो जावे तो खुदा के न्याय की कचहरी का सारा खेल ही खतम हो जावेगा।

इसी की नकल कुरान शरीफ में (इस्लामी धर्म ग्रन्थ में) की गई है। कुरान शरीफ में स्पष्ट लिखा है कि :—

'यह किताब इस किस्म की नहीं कि खुदा के सिवाय और कोई इसे अपनी तरफ से बना लावे। बल्कि जो (किताबें) इससे पहिले की हैं उनकी तसदीक करती हैं और इन्हीं की तफ़सील हैं। इसमें सन्देह नहीं कि यह खुदा की उतारी हुई हैं।"

कु० पा० ११ सूरे यूनिस रुकू ४ आ० ३७ ॥

"उसी ने तुम पर यह किताब वाजिबी उतारी जो उन (आसमानी किताबों) की तसदीक करती हैं जो इससे पहिले (उतर चुकी) हैं; और उसी ने पहिले लोगों को नसीहत के लिये तौरात और इन्जील उतारी "।३॥ कु० पा० ३ सूरे आल इमरान रु० १ ॥

इससे स्पष्ट है कि कुरान शरीफ तौरात व इन्जील की (अर्थात बाइबिल की) तफसील है। इसमें इन्हीं की बातों की

व्याख्या की गई है, यह स्वतन्त्र ग्रन्थ न होकर उनकी नकल पर बना है। अतः इसमें भी खुदा की याद्दाश्त को रजिस्टर रखने की बात बाइविल से ली गई है। इस विषय में कुछ प्रमाण हम कुरान से उपस्थित करते हैं—

(खुदा ने कहा) "यह लोग जो नाहक पैगम्बरों को कत्ल करते चले आये हैं उसके साथ हम इनकी इस बकवाद को भी लिखे रखते हैं···।" ॥ कु० पा० ४ सूरे आल इमरान रुकू १६ आ० १८२॥ "····और जैसी जैसी सलाहें रातों को करते हैं अल्लाह लिखता जाता है···।" कु० पा० ५ सूरे निसा रुकू ११ आ० ८१ ॥

(खुदा ने कहा) और (लोगों की कारगुजारियों का) रजिस्टर रखा जायगा तो (ऐ पैगम्बर !) तुम गुनाहगारों को देखोगे कि जो कुछ रजिस्टर में है उससे डर रहे हैं और कहते जाते हैं कि हाय हमारा दुर्भाग्य, यह कैसा रजिस्टर है और जो कुछ उन लोगों ने कहा था कोई छोटी या बड़ी बात ऐसी नहीं जो उसमें न लिखी हो (वह सब कर्म लेखा में लिखा हुआ) मौजूद पावेंगे और तुम्हारा परवर्दिगार किसी पर वे इन्साफी नहीं करेगा।" कु० पा० १५ सूरे कहफ़ रुकू ६ आ० ४६ ॥

(खुदा कहता है) "हरगिज नहीं जो कुछ यह बकता है हम लिख लेते हैं और इसके हक में सजा बढ़ाते चले जायेंगे ॥" कु० पा० १६ सूरे मरियम रुकू ५ आ० ७६ ॥

खुदा ने कहा) "सो जो आदमी नेक काम करे और वह ईमान भी रखता हो तो उसकी कोशिश व्यर्थ होने वाली नहीं और हम उसको लिखते जाते हैं ॥" कु० पा० १७ सूरे हज्ज रुकू ७ आ० ६४ ॥

(खुदा ने कहा) "और हम किसी आदमी की ताकत से

बढ़कर बोझ नहीं डालते और हमारे यहाँ (लोगों के काम का) रजिस्टर है जो ठीक हाल बताता है और उन पर अन्याय न होगा ।।" कु० पा० १८ सू० मोमिनून रुकू ४ आ० ६२ ।।

'और बड़ी उम्र वाला जो उम्र पाता है और जिसकी उम्र घटती है सब किताब में है, यह अल्लाह पर आसान है ।।" कु० पा० २२ सू० फातिर रु० २ आ० ११ ।।

(कयामत के दिन खुदा की कचहरी लगेगी) "और जमीन अपने परवर्दिगार के नूर से चमक उठेगी और किताबें रख दी जायेंगी और उनमें पैगम्बर गवाह हाजिर किये जायेंगे और उनमें इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जायगा और उन पर जुल्म न होगा ।।" कु० पा० २४ सू० जुमर रुकू ७ आ० ६९ ।।

(खुदा ने कहा) "और तू देखेगा कि हर गिरोह घुटने के बल बैठा होगा । हर गिरोह अपने (कर्म) लेखा के पास बुलाया जायगा । जैसे तुम काम करते थे आज उनका बदला पाओ । २८ । यह हमारा दफ्तर है तुम्हारे काम ठीक बतलाता है । जो कुछ तुम करते थे हम उनको लिखवाते जाते थे । २९ । कु० पा० २६ सूरे जासियह रुकू ४)

"कुकर्मी लोगों के कर्म रोजनामचा और कैदियों के रजिस्टर में हैं ।७। और (ऐ पैगम्बर) तू क्या समझे कि कैदियों का रजिस्टर क्या चीज है ।८। वह किताब है (जिसकी खाना पूरी होती रहती है) ।९। अच्छे मनुष्यों का कर्म लेखा बड़े रुतबे वाले लोगों के रजिस्टर में है ।१८। और (ऐ पैगम्बर) तुम क्या समझो कि बड़े रुतबे वाले लोगों का रजिस्टर क्या चीज है ।१९। यह एक किताब है (जिसकी) खाना पूरी होती रहती है ।२०। फरिश्ते जो नजदीक हैं उस पर तैनात हैं।" ।२१। ।।कु० पा० ३० सूरे ततफीफ़ रुकू १ ।।

"हम मुर्दों को जिलाते हैं और जो आगे भेज चुके हैं उनकी

निशानी हम लिख रहे हैं और हमने हर चीज खुली असल किताब में लिख ली है।" कु० पा० २३ सूरे यासीन रुकू १ आ० १२ ॥

"जब दो लेने वाले दाहिने और बायें बैठे लेते जाते हैं (लिखते जाते हैं) ।१६। जो बात आदमी बोलता है उसके पास निगहबान मौजूद हैं। १७ ॥ कु० पा० २६ सूरे काफ रु० २ ॥

'खुदा जिसको चाहे मिटा देता है और (जिसको चाहता है) कायम रखता है और उसके पास असल किताब है ।३६।" कु० पा० १३ सूरे राद रुकू ६ ॥

समीक्षा—ऊपर के प्रमाणों में पाठक देखेंगे कि खुदा के पास अच्छे और बुरे काम करने वालों के पृथक-पृथक रजिस्टर रहते हैं जिनमें खुदा मुनीमजी की तरह हर आदमी के सभी काम व उनकी बातचीत की सभी बातें लिखता रहता है। रजिस्टरों की रक्षा करने को फरिश्ते तैनात रहते हैं ताकि कोई उनको चुरा न ले जावे या नष्ट न कर दे कयामत के दिन खुदा उन्हीं रजिस्टरों को देखकर हर आदमी के कर्मों का फैसला करेगा। किसी को दोजख में झोंकेगा तो किसी को वहिश्त (स्वर्ग) में भेजेगा। हर आदमी पर खुदा ने दो दो फरिश्ते लगा रखे हैं जो उसके कामों को दुनियाँ में लिखते रहते हैं। और वे ही कर्म पत्र हर आदमी को कयामत के दिन पेश किये जावेंगे।

खुदा बिचारे की याद्दाश्त इतनी कमजोर है कि उसे हर बात अपनी डायरी (रजिस्टरों) में लिख लेनी पड़ती है। हर बात को खुदा यदि न लिखे तो भूल जावे और फिर उसे वह बात याद दिलाने के लिये दूसरों की मदद लेनी पड़े। इसलिये डायरी (रोजनामचा) उसे भरते रहना पड़ता है। यह नहीं बताया गया कि उन रजिस्टरों के पन्ने कागज के हैं या पत्थर के हैं। यदि कागज के हैं तो कागज इस जमीन की कौन-सी पेपर मिल से खुदा ने मँगाया है। रजिस्टर जिल्द वाले हैं या

खुले पन्नों के हैं? उन कर्म लेखा पत्रों का व रजिस्टरों का मालखाना खुदा ने कहां पर कायम कर रखा है ?

खुदा बन्द भी किताबें रखते हैं, कलम पेंसिल, फाउन्टेनपैन रखते हैं, मालखाना भी उनका है, याद्दाश्त को रजिस्टर व रोजनामचा भी रखते हैं, और उनकी रोजाना खानापूरी भी करते रहते हैं यह बात बड़ी विचित्र सी लगती है। खुदा को भी बड़ी परेशानी रहती होगी। इस जमीन के साढ़े तीन अरब आदमियों का हिसाब किताब लिखना पड़ता होगा, और भी लोकों में आदमी रहते हैं उनका भी हिसाब रोजाना लिखना होता होगा। खुदा का सारा वक्त इसी लिखा पढ़ी में बीत जाता होगा और दूसरे जरूरी कामों को वक्त भी नहीं मिल पाता होगा। बड़ी परेशानी उसको होती होगी।

किताबों को देखकर फैसला किया जावेगा तो वे किताबें दीवानी की होंगी या कानून फौजदारी की होंगी यह नहीं बताया गया। अच्छे मजिस्ट्रेट तो कानून याद रखते हैं। जिन्हें याद नहीं रह पाते हैं वे किताबें देखते हैं। खुदा को तो कुरान शरीफ में सब कुछ जानने वाला लिखा है तब उसे किताबों की फैसले के लिये क्यों जरूरत होगी यह बात हमारी समझ में नहीं बैठ सकी है।

कुरान मजीद तथा बाइबिल लिखने वालों ने खुदा को भी मामूली आदमी जैसा ही समझ लिया था और उसके कामों को भी अपने ही कामों जैसा मान लिया था। पर यह नहीं सोचा कि इन्सान जैसा खुदा का मानने पर उसमें इतने दोष आ जावेंगे कि जिससे वह खुदा ही नहीं रह जावेगा। जो खुदा अनन्त विश्व को बनाकर धारण कर रहा है क्या वह नोट-बुकें लिखा करता है? कैसी हास्यास्पद कल्पना इन मजहबी लोगों ने खुदा की कर रखी है। भूल जाना, याद न रख सकना दिमाग

की बीमारी व कमजोरी होती है जो कि दवायें खाने से मिट भी जाती हैं। तो क्या खुदा बन्द अपने दिमाग की कमजोरी को दूर नहीं कर सकते हैं। क्या खुदा को याद्दाश्त की कमजोरी मानना खुदा को बदनाम करना नहीं है ? खुदा के दफ्तर भी हैं, शायद उनमें हर दफ्तर के लिए क्लर्क, हैडक्लर्क, इन्सपैक्टर व दफ्तरों की रक्षा को थानेदार सिपाही आदि भी होंगे ? ये दफ्तर ईंट, सीमेंट के बने हैं या पत्थरों या कार्ड-बोर्ड अथवा लकड़ी के तख्तों के बने हैं यह रहस्य नहीं खोला गया है। ये दफ्तर कहाँ पर बने हैं- यह भी नहीं बताया गया है। उत्तम होता यदि यह भी बता दिया जाता ताकि अमरीका व रूस के लाखों टन वजनी राकेट जो तारों को भेजे जाते हैं इनसे बचा कर भेजे जाते। कहीं ऐसा न हो कि कोई राकेट खुदा के दफ्तर से टकरा कर उसे भिसमार (ध्वस्त) कर डाले और खुदा के रजिस्टरों में आग लग जावे।

खुदा के पास असल किताब भी लिखी रखी है तो उसका नाम क्या है और उसमें क्या २ लिखा हुआ है ? यदि वह किताब हमारी दुनियाँ में आ जावे तो रिसर्च के विद्यार्थी उस पर खोज करके संसार का कल्याण भी कर सकेंगे। और Ph.D. बन सकेंगे। खुदा की किताब यदि खुदा के ही पास रही तो दुनियां वालों को उससे क्या लाभ होगा। उसको खुदा ही पढ़ता तथा अपना दिल बहलाता रहेगा यह भी नहीं बताया कि किताव ज्ञान विज्ञान की है, हिकमत (इलाज) की है, लोगों का इतिहास उसमें लिखा है या कोई नाविल (उपन्यास) है जिसकी खुदा ने कुरान शरीफ में तारीफ की है। यदि वह असल किताब हैं तो नकली किताब कौन सी है यह भी खोल दिया जाता तो उत्तम होता।

हमें इससे कुछ सरोकार नहीं है कि ईसाई और मुसलमान खुदा को कमअक्ल या कैसा मानते हैं, वे चाहे जैसा मानते रहें। हमारा उद्देश्य तो पाठकों को यह बताना है तथा सभी पर यह प्रगट करना है कि बाइविल और कुरान शरीफ ने खुदा को अल्पज्ञ (कमअक्ल) माना है और उसे न्याय करने के लिये रोजनामचा व किताबें रखने वाला मानकर खुदा का अपमान किया है। इस विषय में वैदिक धर्म की मान्यता ही सर्वश्रेष्ठ है और सभी को वही मानना चाहिये। सभी को ऐसे कमअक्ल खुदा, उसकी धर्म पुस्तक और उसके मजहब से बचना चाहिये वरना वे गुमराह हो जावेंगे। ऐसे खुदा को मानने से किसी का भला नहीं हो सकेगा जिसका काम मुंशी जी की तरह लिखते रहने का हो।

ईश्वर के विषय में आर्य समाज के दस नियमों में से दूसरे नियम में निम्न प्रकार लिखा है—

"ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।"

बाइविल और कुरान का खुदा इन गुणों से रहित है अतः उपासना के योग्य नहीं है।

॥ समाप्त ॥

देशबन्धु प्रेस हाथरस।

खंडन मंडन ग्रन्थमाला के ग्रन्थों की सूची

वैदिक यज्ञ विज्ञान	१.८०	मृतक श्राद्ध खण्डन	३०
बाइबिल दर्पण	२.५०	शिवजीके चार विलक्षण बेटे	३७
कुरान दर्पण	२.००	पौराणिक कीर्तन पाखंड है	२५
भागवत समीक्षा	३.००	शास्त्रार्थ के चैलेंज का उत्तर	२५
गीता विवेचन	२.७५	बाइबिल पर सप्रमाण३१प्रश्न	२५
अवतार रहस्य	१.५०	मरियम और ईसा	१०
मुनिसमाज मुख मर्दन	१.५०	ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	६०
जैनमत समीक्षा	१.६०	पौराणिक मुख चपेटिका	२०
टोंक का शास्त्रार्थ	१.२५	अर्थ सहित वैदिक संध्या	२५
शिव लिङ्ग पूजा क्यों ?	१.३५	खुदा और शैतान	१५
अद्वैतवाद मीमांसा	१.००	हनुमानजी बन्दर नहीं थे	१५
प्रार्थना भजन भास्कर	१.००	हसामत का पोलखाता	२०
वैदिक व्याख्यान माला	१.००	सना०धर्ममें नियोग व्यवस्था	२५
ईश्वर सिद्धि	२.००	संसार के पौराणिक विद्वानों	
वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है	०.७५	से ३१ प्रश्न	१०
माधवाचार्यको डबल उत्तर	०.७५	अवतारवाद पर ३१ प्रश्न	१०
पुराण किसने बनाये	०.७५	मूर्ति पूजा पर ३१ प्रश्न	१०
पौराणिक गप्पदीपिका	०.५५	गीता पर ४१ प्रश्न	२५
मूर्ति पूजा खण्डन	१.३५	नृसिंह अवतार वध	१२
कबीर मत गर्व मर्दन	६०	ईसाईमत का पोलखाता	१०
गुरुडम के पाखण्ड	४०	ईसा मुक्तिदाता नहीं था	१०
सत्यार्थप्रकाश की छीछालेदड़ का उत्तर	४०	कुरान खुदाई किताब नहीं है	१५
कुरान की विचारणीय बातें	४०	विभिन्न मतों में ईश्वर	३०
पुराणों के कृष्ण	४०	कुरान पर गहरी नजर	....
नारी पर मजहबी अत्याचार	३०	स्वर्ग विवेचन	२०
		खुदा का रोजनामचा	१५

वैदिक साहित्य प्रकाशन कासगंज (उ० प्र०) भारतवर्ष

* ओ३म् *

खण्डन-मण्डन ग्रन्थमाला पुष्प सं० ३०

खुदा और शैतान

लेखक :—

आचार्य डा० श्रीराम आर्य

कासगंज (उ० प्र०)

प्रकाशक—

वैदिक साहित्य प्रकाशन

कासगंज (उ० प्र०) भारतवर्ष

द्वितीय वार सन् १९६७ मू० १५ पैसे

॥ ओ३म् ॥

खण्डन-मण्डन ग्रन्थमाला पुष्प सं० ३०

खुदा और शैतान

लेखक :—

आचार्य डा० श्रीराम आर्य

कासगंज (उ० प्र०)

प्रकाशक:—

वैदिक साहित्य प्रकाशन

कासगंज (उ० प्र०) भारतवर्ष

दयानन्दाब्द १४३

तीय वार' सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०६८ मू० १५ पैसे

सन् १९६७

खुदा और शैतान

शैतान का नाम तो सभी लोगों ने सुना है, लेकिन वह क्या है और उसकी उत्पत्ति कैसे हुई, इत्यादि बातों को बहुत से हिन्दू तो क्या मुसलमान भी नहीं जानते, इस लिए संक्षेप में यहां कुछ हाल लिखा जाता है। शैतान के वर्णन से तमाम हदीसें और तफ़ासार भरी पड़ी हैं। उसकी कथा बड़ी ही विचित्र है। सुना है कि खुदा ने दोज़ख में दो सूरतें पैदा की (१) गिद्ध की और (२) शेर की। जब इन दोनों ने आपस में सम्भोग किया तो उससे एक फरिश्ता पैदा हुआ (पाठक किसी मुशलमान से पूछो कि दोनों (गिद्ध और शेर) में नर व मादा कौन थे गिद्ध और शेर का मैथुन कैसी मजेदार बात है और उससे फरिश्ते का उत्पन्न होना तो इससे भी बढ़कर है। इसलाम धर्म में अप्राकृतिक मैथुन द्वारा जो पैदा हो वह फरिश्ता भी बन जाता है। क्या कभी आपने पक्षी और चौपाये का सम्भोग सुना है, और ऐसे सम्भोग से फरिश्ते की पैदायश सुनी है? खैर, खुदा ने इस फरिश्ते का नाम अज़ाज़ील रख दिया। उसने वहाँ पर (दोज़ख में) एक हजार वर्ष तक अल्लाह का सिजदा किया। नहीं समझ में आता कि ऐसी गलती क्यो की? क्योंकि खुदा तो वहां पर था ही नहीं, फिर सिजदा किसको?

अगर था तो क्यों ? क्यों कि दोजख़ तो सिर्फ़ काफिरो के लिए है न-ख़ैर वह आज़ाजील फरिश्ता इस प्रकार प्रत्येक जमीन पर एक २ हजार वर्ष तक सिजदा करता हुआ सातवीं ज़मीन पर आ गया। जब वह सब से ऊपर की जमीन पर आया तो खुदा ने उसको इस सेवा के पुरस्कार में दो बाजू (पंख) दिये। उसके पंख ज़वरज़द अर्थात् पत्थर के थे (धन्य इन्साफ़)। क्या अच्छा इनाम दिया, विचारे को इतनी सेवा के बदले में मिला तो क्या कि पत्थर। क्या खुदा के यहां सच्चे बाजुओं का अकाल पड़ गया था ? पत्थर के पंख पाकर वह फ़रिश्ता लगा उड़ान भरने, और उड़ता २ पहले आस्मान पर जा धमका यहां पर उसने एक हजार (१०००) वर्ष तक सिजदा किया। तब खुदा ने उसे खाइफ़ की उपाधि (डराने वाले की उपाधि प्रदान की। उसके बाद वह उड़कर दूसरे आस्मान पर पहुँच गया। वहां भी १००० वर्ष तक सिजदा किया। तब खुदा ने खुश होकर (उपासक) आबिद की डिग्री अता फरमाई। इस प्रकार वह क्रमशः हर एक आस्मान पर पहुँचता गया और प्रत्येक पर १०००/२ वर्ष तक सिजदा करता रहा। खुदा भी उसे 'सलाह' और 'वला' की डिग्रियां देता रहा। अन्त में उसने अर्श पर पहुँच कर छः हजार (६०००) वर्ष तक सिजदा किया। पृथ्वी और आकाश में कोई जगह तिल के बराबर भी न बची जहां अज़ाज़ील ने सिजदा न किया हो

कहा जाता है कि उसे ऐसा करने में पूरे छः लाख (६०००००) वर्ष व्यतीत करने पड़े थे। बहुत समय के बाद एक दिन अज़ाज़ील ने खुदा से प्रार्थना की कि यदि आप मुझे 'लोहे महफ़ूज़' देखने की आज्ञा दें तो बड़ी कृपा हो। खुदा ने उसकी यह प्रार्थना स्वीकार करली, और इस्राईल को साथ देकर उसे 'लोहे महफ़ूज़' देखने को भेजा। (पाठक नोट करलें कि लोहे महफ़ूज़ देखना कोई आसान काम नही है। उसके लिए स्पेशल पासपोर्ट (या टिकिट) लेना पड़ता है। या यों कहो कि लाइसेन्स मिलता है। और एक 'गाइड' दिखाने के लिए भी जाता है।) वहां पहुँच कर अज़ाजील ने एक जगह लिखा देखा कि "कोई एक खुदा का बन्दा ६००००० वर्ष तक सिजदा करेगा, मगर एक सिजदा न करने पर 'इब्लीस' अर्थात् शैतान बना दिया जावेगा।" यह पढ़ कर अज़ाजील की समस्त आशाओं पर पानी फिर गया और वह अत्यन्त दुखी होकर इधर उधर ६००००० वर्ष तक रोता विलाप करता भटकता फिरा (खुदा की बेरहमी नोट करने योग्य है) बिचारे की ६००००० वर्ष की कड़ी मेहनत पर एक दम ज़रा सी बात के लिए पानी फेर दिया। मुसलमानो ! इससे शिक्षा लो, कि खुदा का कितना बड़ा आविद केवल एक सिजदा न करने के कारण ही इब्लीस बना दिया गया। तब तो तुम्हारा बहिश्त जाने का विचार करना केवल स्वप्न ही है। उसका दुःख कुछ हल्का पड़ा तो ज़न्नत में एक

'नूर' की मेज पर रख कर उसने फरिश्तों को शिक्षा देनी आरम्भ की। अज़ाजील ने १०० वर्ष तक यह काम किया। उसके इस काम से खुदा बहुत ही खुश हुआ। और उसने उसे ज़न्नत का खज़ान्ची बना दिया।

इस पर भी कई हजार वर्ष तक अज़ाजील कार्य करता रहा। एक दिन अकस्मात खुदा को किसी ने सूचना दी कि पृथ्वी पर रहने वाले 'जिन्नों' ने बड़ा उत्पात मचा रखा है। खुदा को यह बलवा रोकने का उपाय सोचना पड़ा। अन्त में उन्होंने अज़ाज़ील फरिश्ते को ४००० फरिश्तों का जनरल कमांडिंग आफ़िसर बना कर जिन्नों को दमन करने के लिए स्पेशल ड्यूटी पर भेज दिया। अज़ाजील ने दल बल सहित पहुँच कर अपनी बुद्धिमता से ऐसा अच्छा प्रबन्ध किया कि पृथ्वी पर शीघ्र ही शान्ति स्थापित हो गई। खुदा ने अपनी इस विजय के लिए उसे विशेष अधिकार देकर सम्मानित किया। अच्छा ही हुआ कि इस लड़ाई में खुदा की जीत हो गई, वरना सत्यानाश हो जाता। और फिर इतने झगड़े की जरूरत ही क्या थी। तारे तोड़ कर दो चार मार देता, झगड़ा खतम हो जाता, क्यों कि 'सितारे शैतान को मारने के लिए पैदा किये हैं' देखो मिश्कात किताबुल ईमान जि० ४ हदीस न० ८६ तथा "तारा छूटना जिन्नात को मारना है" देखो जि० ४ हदीस न० ८५।

एक समय खुदा ने सब फरिश्तों को बुलाया और आदम को भी बुलाया। आज इस बात की परीक्षा का दिन था कि फरिश्ते

बड़े हैं या आदम। खुदा की इच्छा थी कि जैसे बने फरिश्तों को नीचा दिखाकर आदम को ऊंचा बना दिया जाय। इसलिए खुदा ने आदम को उन सब वस्तुओं के नाम पहले ही रटा रखे थे जिनके नाम की वह फरिश्तों से पूछने वाला था। इस बात का जिक्र आस्मानी किताब कुरान में भी है। जैसे—

व अल्लम आदमल अस्मा अकुल्लहा सुम अरजहुम आलस्मलाईकते फकाल अम्बे ऊनी वे अल्माये हाऊ लाये इन कुन्तुम सादेकान।

अर्थात्—और उसने (खुदा ने) आदम को सब वस्तुओं के नाम सिखलाये। फिर उन वस्तुओं को फरिश्तों के सामने लाकर कहा कि यदि तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ।

फरिश्तों ने कहा—कालू सब्हान कला ईल्मलना इल्लामा अलम्तना इन्नक अन्तल अली मुल्हकीम"। अर्थात् तू पवित्र है। हम उतना ही जानते हैं जितना कि तूने हमें सिखलाया है। निश्चय पूर्वक तू सर्वज्ञ और बड़ाही प्रवीण हैं।

अल्लाह ने कहा—कालया आदमो अम्वेहुम बे असम ईहिम् फल्लमा अम्बाहुम वे अस्माये हिम काल आलम् अकुल्लकम इन्नो गेवस्समावते वल अजे व आल मोमा तुब्दू वमा ने कुन्तुम तक्तो मून" अर्थात- आदम ! तू इन्हें इन वस्तुओं के नाम बतला। फिर जब आदम ने उनको सब चीजों के नाम बतला दिये तब अल्लाह

ने फरमाया कि मैंने कहा न था कि आसमान और जमीन की छुपी हुई बाते मैं जानता हूँ। और बे बातें तुम प्रगट करते हो और छुपाते हो मुझे सब मालूम है। इस प्रकार परीक्षा में सब फरिश्ते फेल हो गये और आदम पास हुआ। आजकल इम्तहान लेने वाला परीक्षक एक को पास करने के लिए प्रश्नों का उत्तर एकको बताकर दूसरों को फेल करने को कुछ भी नहीं बतावे तो लोग उसे क्या कहेंगे । खुदा ने आदम का इतना पक्ष फरिश्तों को फेल करने के लिया इससे क्या जाहिर होता है स्वयं अनुमान पाठक करें। खैर, उस परीक्षा में अजाजील फरिश्ता भी था। वह बेचारा भी फेल हो गया। अल्लाह ने फरिश्तों से कहाकि तुम आदम को सिजदा करो। आदम तुम लोगों से बड़ा है। खुदा की आज्ञा पाते ही अजोजील को छोड़कर सबने आदम को सिजदा किया।

अल्लाह फरमाते हैं—व इजकुलन्य लिल्मलाई कते सूजु दूले आदम फस नदू इल्ला इब्लीस आबावस्तक्वर व कान मिन्कलाफरीन।

अर्थ:-और जब हमने फरिश्तों से कहा कि तुम सब आदम को सिजदा करो तो सबने सिवाय इब्लीस के सिजदा किया। उसने न माना। गर्व किया और वह काफिरों में से था। कुरान की यह बात बड़ी ही विचित्र है। मुसलमानों को भी इस पर ध्यान देना चाहिए कि रातदिन खुदा की कदमबोसी करने वाला अजाजील, सब से

बड़ा आबिद, जिसने लाखों वर्ष तक सिजदा किया, आज केवल आदम को सिजदा न करने के कारण 'इब्लीस' (शैतान) बना दिया गया, और काफिर कह कर फरिश्तों की श्रेणी से बाहर निकाल दिया गया। ये बातें जन्नत की हैं। जन्नत में काफिर नहीं रह सकते ऐसा कुरान में है फिर वह अजाजील इतने दिनों तक वहां कैसे रहा ? क्या खुदा को यह नहीं मालूम था कि वह काफिर है ? यदि आदम की परीक्षा के दिन ही पोल खुली हो तो पिछली आयत में फरिश्तों का यह कहना कि तू सर्वज्ञ और कार्य दक्ष है, बिलकुल झूठ साबित होता है। ऐसी बात से खुदा की सर्वज्ञता का लोप होता है। मुसलमानों ! इस आयत से शिक्षा लो, कि खुदा का परम भक्त अजाजील एक सिजदा न करने के कारण 'इब्लीस' बना दिया गया, तो फिर आप लोगों को जन्नत कैसे नसीब हो सकता है। क्यों व्यर्थ ही दोजख व जन्नत के लोभ में पड़कर अमूल्य मनुष्य जीवन बरबाद करते हो अब भी सँभल जाओ।

परीक्षा खत्म हो चुकने पर अजाजील ने सिजदा नहीं किया और अपनी जगह पर अकड़कर खड़ा रहा। अल्लाह ने अजाजील से कहा– अजाजील तुमने आदम को सिजदा क्यों नहीं किया ? उसने कहा 'आपने फरमाया था कि सिवा मेरे और किसी को सर मत झुकाना'॥ अल्लाह बोला–'अच्छा तो अब में हुक्म देता हूँ कि आदम को सिजदा करो'॥ अजाजील बोला–'आप अपनी पहिली आज्ञा क्यों मन्सूख करते हैं' ? अल्लाह–'यह मेरी इच्छा पर अवलम्बित है'॥ अजा–भला यह आपकी

कैसी इच्छा है। अल्लाह– मैं इसको बतलाना चाहता। अजा तो आप जब तक कोई कारण नहीं बतलावेंगे तबतक मैं हरगिज मर्दुम परस्ती नहीं करूंगा, क्योंकि अल्लाह बेजा काम की आज्ञा नहीं देता है। अल्लाह तो क्या मेरा हुक्म न मानोगे ? अजा- अगर आप इसे हुक्म न मानना समझते हैं तो ऐसा ही सही। अल्लाह-देखो आदम तुम से बुजुर्ग है। अजा-किस बात में ? अगर उम्र के लिहाज से कहते हो तो मैं उससे बड़ा हूँ। अल्लाह–नहीं जिस्म के लिहाज से। अजा- अच्छा तो आप इसका और मेरा जरा मुकाबिला ही करा दीजिए। अल्लाह देख मैंने इसे अपने हाथों से बनाया है। अजा–आपने मुझे अपनी कुदरत से पैदा किया है और हमेशा कुदरती चीज बनावटी चीज से कहीं अच्छी मानी गई है। अल्लाह आदम इबादत ज्यादा करेगा। अजा यह तो जब करेगा तब करेगा। मैं तो छः लाख साल तक कर चुका हूँ। इतनी तो शायद आदम की उम्र भी न होगी। अल्लाह यह तुमसे इल्म में ज्यादा है। देखो जिन २ वस्तुओं के नाम तुम नहीं बता सके उनके नाम उसने बता दिये। अजा-वह तो आप ने पहले से उसे रटा दिये थे। आप मुझे रटादें। मैं भी बता दूँगा। अल्लाह-बस अब अधिक हुज्जत मत करो जो कुछ मैं कहता हूँ उसे मानो। अजा- फरमाइये। अल्लाह आदम तुमसे अफजल है। अजा क्या खूब। आप क्या फरमाते हैं। कहाँ एक फरिश्ता और कहाँ सड़ी मिट्टी से बना हुआ एक इन्सान।

अल्लाह बस चुप रहो। तुम बड़े दुष्ट हो। अजा-आप तो नाहक नाराज हो रहे हैं इसमें दुष्टता की क्या बात है। अल्लाह क्या यह दुष्टता नहीं है। क मैं तुझे सिजदा करने की इजाजत देता हूँ और तू सिजदा न करके फिजूल बकबास को कर रहा है। अजा-आप तो व्यर्थ ही नाराज होते हैं। आपही ने तो कहा था कि जान पर खेलजाना मगर लाइलाह इल्लेल्लाह" इस कल्मे से मुह न मोड़ना। फिर भला मैं आपकी इस घुड़की से आदम को सिजदा करके 'मुशरिक' क्यों बनू। क्या आप मेरी परीक्षा ले रहे हैं। अल्लाह- ओ मर्दूद ! अब तू अपने आपे से बाहर होता जा रहा है। व्यर्थ की बातें बोलकर 'मुल्हिदों, नास्तिक की तरह मन्तिक बघार रहा है। अब तू मुझे सिर्फ दो लफ्जों में यह बता कि तू मेरे इस हुक्म की तामील करेगा या नहीं। अजा-आप न जाने कैसी बातें कर रहे हैं मैं तो आपके ही हुक्म की तामील कर रहा हूँ। आप निश्चय जाने मैं आपकी अजमाइश में कभी फेल नहीं होऊँगा। आप दो लफ्जो में जबाब चाहते हैं लेकिन मैं एक ही लफ्ज में देता हूँ कि जब तक मेरे दम में दम हैं तब तक मैं सिवाय आपके किसी को भी सिजदा नहीं करूंगा अल्लाह- बस बस समझ गया। तू इब्लीस (न फर-मानी करने वाला)है। फौरन मेरे आगे से चलाजा अजा-मैंने आज तक आपका एक भी हुक्म नहीं टाला है इतने परभी आप मुझे इब्लीस कहते हैं आप तो सचमुचही बिगड़ गये मैंतो सोचरहा था कि इस इम्तहान में

पास होते पर आप मुझे इज्जत बख्शेंगे। अल्लाह–चुप रह। आगे मुंह मत खोल। निकल जा यहां से। अब हम तेरी कोई बात न सुनेंगे। तेरा नाम आज से शैतान है। शैतान– हुजूर आप मेरी जात पर रहम करें, और इन्साफ की निगाह से देखें, तो आप मुझे सच्चा पायेंगे, क्योंकि मैंने आपकी ६ लाख साल तक इबादत की है। भला मैं इसे, आदम को सिजदा करके कैसे बर्बाद करदूं। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ इन्साफ करें। अल्लाह–जो कुछ भी हमें हुक्म देना था दे चुके। अब हम तेरी बातों पर ध्यान देना नहीं चाहते। तेरा यह इसरार व्यर्थ है। शैतान—तो क्या यही आपका न्याय है। अल्लाह—हां यही न्याय है। अब बहुत हो चुका। मैं तब से तेरी हुज्जत सह रहा हूँ। अगर तू अब अपना भला चाहता है तो यहाँ से काला मुँह करजा। शैतान–अगर न गया तो आप मेरा कर ही क्या लेंगे। अल्लाह मैं सब कुछ कर सकता हूँ। तू जानता है मैं कादिरे मुतलक (सर्वशक्तिमान) हूँ। शैतान—अगर आप सब कुछ कर सकते हैं तो जरा मुझसे आदम को सिजदा ही करा लीजिए। मेरे ख्याल से आप कुछ भी नहीं कर सकते। कोरी बातें ही बातें हैं। अल्लाह–मैं तो जानता ही था कि तू शराशत का पुतला है। मेरा हुक्म नहीं मानेगा। शैतान—जब आप यह जानते ही थे तो मुझे सिजदा करने का हुक्म ही क्यों दिया था अल्लाह- तुझे लअनत है। तू एक पल भी यहाँ पर मत ठहर। तू गुमराह हो गया। मैं तुझे दोजख में डालूँगा। शैतान—बस इससे अधिक और आप कर ही क्या सकते हैं। यह आप का मकान है चाहे जो कह सकते हैं। हां इतना कहता हूँ कि आपने मुझे गुमराह किया है तो मैं भी हमेशा आपके बन्दों को गुमराह

करता रहूँगा। अल्लाह—शौक से करना। जो तेरी पैरवी करेंगे कसम खाकर कहता हूँ उन्हें मैं दोजख में डालूँगा। शैतान—बस यही आपकी आखिरी धौंस है। इससे अधिक और आप क्या करोगे। देखा जायगा। अच्छा तो सलामाले कुम॥ (इतना कह कर शैतान बहादुर वहां से चले गये। यह उपरोक्त कथा हिन्दुओं के लिए तो मनोरंजक सामिग्री है और मुसलमानों के लिए बड़े ही बिचार की बात है। अल्लाह ने फरमाया कि जिसे शैतान गुमराह करेगा उसे मैं दोजख में डालूँगा। और शैतान ने भी खम ठोक कर वायदा किया कि मैं तेरे बन्दों को गुमराह करूँगा। जिस शैतान ने आदम को धोका दिया और अल्लाह का सामना किया वह इन्सान को तो हमेशा ही धोखा दे सकता है। इस कथा से यह सार निकलता है कि कुरानी खुदा सर्व शक्तिमान (कादिरे मुतलक) हरगिज नहीं है। कमजोरों पर ही अत्याचार करना जानता है परन्तु जबर्दस्त शैतान के सामने उसका कुछ बस नहीं चलता खुदा में खुदाई तो नाम को भी नहीं है क्योंकि खुदा से शैतान जबर्दस्त है। शैतान और खुदा की घरेलू लड़ाई के कारण(खुदा) बन्दों की मिट्टी फलीद करता है यह यहां का न्याय है ऐसे अन्यायी खुदा से मुसलमान लोग जो जन्नत पाने की आशा रखते हैं वह भ्रममात्र है। इसी से हम कहते हैं कि वैदिक धर्मही सर्वश्रेष्ठ है। उसी के द्वारा जीवों का निस्तार हो सकता है, अन्यथा नहीं।

नोट—शैतान तथा फरिश्तों के बारे में विशेष जानने के लिए हमारी पुस्तक कुरान दर्पण में अध्याय ८ प० १०२ से ११६ तक देखें।

बाईबिल में शैतान का उल्लेख

ईसाइयों के धर्म ग्रन्थ बाइबिल में शैतान का उल्लेख इस प्रकार मिलता है कि खुद (यहोवा) ने आदम और उसकी पत्नी हव्वा को पैदा करके उनको आदेश दिया कि 'तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है। १६। पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है उसका फल तू कभी न खाना क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जायगा। १७॥ उत्पत्ति २॥ यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाये थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उसने स्त्री से कहा.....।१। तुम निश्चय न मरोगे वरन्.....जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।५। (तब उन दोनों ने उस फल को खाया और दोनों की आंखें खुल गईं)।६ व ७। तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा—तूने जो यह किया है इसलिए तू सब घरेलू पशुओं और सब बनैले पशुओं से अधिक शापित है १४। उत्पत्ति ३।

फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई। मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले और अजगर और उसके दूत उससे लड़े। ७। परन्तु प्रबल न हुए और स्वर्ग में उनके लिए फिर जगह न रही।८ और वह बड़ा अजगर अर्थात् वही पुराना सांप जो इब्लीस और शैतान कहलाता है और सारे संसार का भरमाने वाला है पृथ्वी पर गिरा दिया गया और उसके दूत उसके साथ गिरा दिये।९। प्रकाशित वाक्य १२॥ बड़े बोल बोलने और निन्दा करने के लिए उसे एक मुँह दिया गया। बयालीस महीने तक काम करने का अधिकार दिया गया।५। और उसे यह

अधिकार दिया गया कि पवित्र लोगों से लड़े और उन पर जय पाये··· ।७। प्रकाशित वाक्य १३॥

फिर मैंने एक दिन स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा जिसके हाथ में अथाह कुण्ड की कुंजी और एक बड़ी जंजीर थी ।१। और उसने उस अजगर अर्थात् पुराने सांप को जो इब्लीस और शैतान है, पकड़ के हजार वर्ष के लिए बांध दिया ।२। और उसे अथाह कुण्ड में डालकर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी कि वह हजार वर्ष के पूरे होने तक जाति-जाति के लोगों को फिर न भरमाए इसके बाद अवश्य है कि थोड़ी देर के लिए फिर खोला जाय ।३। और जब हजार बर्ष पूरे हो चुकेंगे तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा । ।७ प्रकाशित वाक्य २०॥

बाइविल के ऊपर के वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि शैतान की कहानी गप्प वालों ने ज्यादा सोच विचार कर नहीं गढ़ी है । जब खुदा ने आदम से कह दिया कि ज्ञान के वृक्ष का फल खाते ही वह मर जावेगा और शैतान के कहने पर उसे खोलने पर आदम और हव्वा दोनों में से एक भी न मरा तो खुदा झूठा साबित हो गया और शैतान सच्चा तथा मनुष्य जाति का भला चाहने वाला सिद्ध हो गया । तब शैतान को धूर्त बताना ईसाई खुदा की बेवकूफी तथा मनुष्य जाति के साथ शत्रुता स्पष्ट हो जाती है, क्योंकि खुदा इन्सान को सदैव बेवकूफ बनाए रखना चाहता था ।

शैतान को सर्प बताना और स्वर्ग में उससे युद्ध होना बताता है कि ईसाईयों के स्वर्ग में भी बलवे व लड़ाइयाँ होती हैं । वहां भी शांति व आनन्द नहीं है ।

शैतान को भले इन्सानों को बहकाने का अधिकार देकर खुदा ने मनुष्य जाति के साथ बदमाशी ही की है, कोई भलाई की बात नहीं की है। उसने शैतान को मनुष्यों पर विजयी होने का वरदान देकर खुद को बड़ा भारी शरारती व मनुष्यों का शत्रु सिद्ध किया है।

जब शैतान को अथाह कुण्ड में हजार साल के लिए बन्द कर दिया गया तो उसे फिर मनुष्यों को बहकाने को पुनः खोल देने की बात क्यों की गई थी ? साथ ही यह भी बताना होगा कि जब बाईबिल को बने लगभग १६०० वर्ष हो गए तथा उससे पहिले ही कभी सैकड़ों हजारों साल पूर्व शैतान को कुण्ड में बन्द किया गया होगा तो उसे कुण्ड में से छोड़े हुए अब तक कितना समय बीत चुका है तथा उसके कुण्ड में बन्द रहने की अवधि (हजार साल) तक के संसार के सारे मनुष्य जो पूर्ण धर्मात्मा रहे होंगे, क्या वे सभी मोक्ष में जावेंगे ?

यह भी बताना होगा कि जब खुदा इन्सान को ज्ञानवान बनाने के विरुद्ध था तो ईसाई लोग पढ़ लिखकर ज्ञानवान बनकर पापी क्यों बनते हैं तथा अपनी औलाद को पापी क्यों बनाते हैं ?

यह स्मरण रखने की बात है कि सम्पूर्ण बाइबिल में विद्या प्राप्त करने का कोई भी उल्लेख का आदेश नहीं दिया गया है।

सत्य बात है कि शैतान की कल्पना से ईसाई तथा मुसलमानों ने अपने खुदा को मूर्ख तथा मनुष्य जाति का दुश्मन सिद्ध कर दिया है।

मुद्रक—डोरीलाल आर्य द्वारा राष्ट्र भाषा प्रिंटिंग प्रेस, हाथरस में छपा।

आचार्य डा० श्रीराम आर्य प्रणीत ग्रन्थों की सूची

मूर्ति पूजा खण्डन	..	....	१.२५
बाइबिल दर्पण (पोल खाता)	...	....	२.५०
कुरान दर्पण ,,	....	....	२.००
भागवत समीक्षा खण्डन	....	....	३.००
गीता विवेचन ,,	....	....	२.००
अवतार रहस्य ,,	...	...	१.५०
मुनि समाज मुख मर्दन ,,	....	...	१.५०
शिव लिंग पूजा क्यों ? ,,	....	....	१.१२
ईश्वर सिद्धि (महत्वपूर्ण ग्रन्थ)	....	...	२.००
वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है	...	....	.७५
पुराण किसने बनाये ? ,,	...	...	.७५
माधवाचार्य को डाल उत्तर	....	...	.६५
कबीर मत गर्व मर्दन	...	....	.६०
पौराणिक गप्प दीपिका	...	...	.५५
शिवजी के चार विलक्षण बेटे	...	....	.३७
मृतक श्राद्ध खण्डन	....	....	.३१
पुराणों के कृष्ण	...	....	.३१
पौराणिक कीर्तन पाखण्ड है	....	...	.२५
शास्त्रार्थ के चेलेंज का उत्तर	....	....	.२५
सनातन धर्म में नियोग व्यवस्था	....	....	.२५
पौराणिक मुख चपेटिका	...	....	.१६
नृसिंह अवतार वध	....	....	.१२
सत्यार्थ प्रकाश की छीछालेदड़ का उत्तर		....	.४०
संसार के पौराणिक विद्वानों से ३१ प्रश्न		....	.१२
अवतार वाद पर ३१ प्रश्न	....	....	.१०
अर्थ सहित वैदिक संध्या	....	...	.१५
खुदा और शैतान	....	....	.१५

मिलने का पता—वैदिक साहित्य प्रकाशन
कासगंज (उ० प्र०) भारतवर्ष

स्व. विरजानन्द दण्डी
ग्रन्थ
5331
पु. परिग्रहण क्रमांक
दयानन्द महिला म

आचार्य डा० श्रीराम आर्य प्रणीत ग्रन्थों की सूची

मूर्ति पूजा खण्डन	...	...	१.२५
बाइबिल दर्पण (पोल खाता	...	...	२.५०
कुरान दर्पण ,,	...	...	२.००
भागवत समीक्षा खण्डन	...	...	३.००
गीता विवेचन ,,	...	...	२.७५
अवतार रहस्य ,,	...	...	१,५०
मुनि समाज मुख मर्दन ,,	...	...	१.५०
शिव लिंग पूजा क्यों ? ,,	...	...	१.२५
ईश्वर सिद्धि (महत्वपूर्ण ग्रन्थ)	...	...	२.००
वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है	...	...	.७५
पुराण किसने बनाये ? ,,	...	...	.७५
माधवाचार्य को डबल उत्तर	...	...	.६५
कबीर मत गर्व मर्दन	...	...	.६०
पौराणिक गप्प दीपिका	...	...	.५५
शिवजी के चार विलक्षण बेटे	...	...	.३७
मृतक श्राद्ध खण्डन	...	...	.३१
पुराणों के कृष्ण	...	...	.३१
पौराणिक कीर्तन पाखण्ड है	...	...	.२५
शास्त्रार्थ के चेलेंज का उत्तर	...	...	.२५
सनातन धर्म में नियोग व्यवस्था	...	...	.२५
पौराणिक मुख चपेटि	...	...	.१६
नृसिंह अवतार वध	...	...	.१२
सत्यार्थ प्रकाश की छीछालेदड़ का उत्तर		...	·४०
संसार के पौराणिक विद्वानों से ३१ प्रश्न		...	.१२
अवतार वाद पर ३१ प्रश्न	...	...	·१०
अर्थ सहित वैदिक सन्ध्या	...	...	.१५
खुदा और शैतान	...	...	.१५

मिलने का पता—**वैदिक साहित्य प्रकाशन**

कासगंज (उ० प्र०) भारतवर्ष